यात्रा/सफर

हम चले
तो घास ने हट कर हमें रास्ता दिया
हमारे कदमों से छोटी पड़ जाती थी पगडंडियाँ
हम घूमते रहे घूमती हुई पगडंडियों के साथ।
-कुमार अनुपम।

लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनर्मिति पन्थ प्यारे हैं।
-सर्वेश्वरदयाल सक्सेना।

किसी को घर से निकलते ही मिल गई मंजिल।
कोई हमारी तरह उम्र भर सफर में रहा।
-अहमद फराज।

है कोई जो बताए शब के मुसाफिरों को
कितना सफर हुआ है कितना सफर रहा है।
-शहरयार

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/travel